

जैनोपयोगी श्रति जनम ग्रंथो.

प्रकरण रलाकर जाग १ खो	••••	••••	६−४− ₀
प्रकरण रत्नाकर जाग ४ थो	••••	••••	ぴーぴー ╸
जैनकथारलकोष जाग १ खो	••••	••••	₹-0-0
जैनकथारलकोष न्नाग २ जो	••••	••••	2-12-0
जैनकथारलकोष जाग ४ थो	••••	••••	₹-8-0
जैनकथारलकोष जाग ६ घो	••••	••••	২ —ঢ়—ঢ়
जैनकथारलकोष जाग ७ मो	••••	••••	≷ −ნ−ი
जैनकथारलकोष जाग ए मो	****	••••	₹—४—□
जैनतत्त्वादर्श हिंदी नाषांतर	••••	••••	ų-σ-σ
जैनतत्त्वादर्श गुजराती न्नाषांतर	****	••••	8-0-0
पांमवचरित्र रंगीन चित्र सहित	••••	••••	ξ −□ − □
वैराग्यकृष्ट्रपत्नता जाषांतर	••••	••••	₹-0-0
अज्ञानतिमिर चास्कर	••••	•••	₹-0-0
सुक्तमुक्तावली अनेक कथार्छ यु	क	••••	₹-□-□
हरिजडसूरिकृत बत्रीश श्रप्टक	••••	••••	2-0-0
जैनकुमारसंत्रव महाकाव्य	••••	••••	2-0-0
शत्रुंजयमाहात्म्य जाषांतर	••••	••••	2− 0−°
ऋध्यात्मसार प्रश्नोत्तर यं श्र	••••	••••	2-U-0
जंबूस्वामी चरित्र कथार्ज युक्त	••••	••••	0-32-0
ऋढीदीपना नकशानी हकीक त	****	••••	₹-0-0
चंद राजानो रास ऋर्थ तथा चि	त्र साथे	••••	V-0-0
समरादित्य केवखीनो रास	••••	••••	9-a-b
श्रीपाल राजानो रास	••••	••••	₹

प्रस्तावना.

~~~

श्रा जगतमां समस्त प्राणीमात्रने त्राणजूत, शरणजूत, श्रा जव तथा परजवमां हितकारी, सुखकारी,
कल्याणकारी ने मंगलकारी एवां त्रण तत्व हे. तेनां
नाम कहे हे. एक तो देव श्रीश्रिरहंतजी, बीजा
गुरु सुसाधु तथा त्रीजो धर्म ते श्रीकेवलिजाषित.
ए त्रण तत्त्व हे, तेने श्राधवानुं मुख्य कारण श्राना
शातना हे, श्रने एने विराधवानुं मुख्य कारण श्राना
तना हे. ते श्राशातना पण विशेषे करी श्रशुचिपणा
थकी थाय हे. ते श्रशुचि वली वे प्रकारनी हे.
एक तो इत्य थकी श्रशुचि श्रने बीजी जाव थकी
श्रशुचि जाणवी.

तेमां जाव अशुचि कार्यरूप हे, अने डव्य अशुचि तेना कारणरूप हे. कारणथी कार्य थाय हे, ए वात सर्व शास्त्रोमां प्रसिद्ध हे, तो अहीं जाव अशुचि जे हे ते अशुद्ध सेखा तथा अशुद्ध मना-दिकना योग अने कषायादिकनी हे, केमके ए अशुद्ध सेखादिकनां जे पुजलो हे ते केवां हे? तो के श्वान, सर्प, अश्वादिक मरण पामेलां जे पशु है तेमनां सडी गयेलां कलेवरमां जे डुर्गंध होय हे ते करतां पण अनंतगणी डुर्गंध ए अग्रुद्ध लेक्यादिकनां पुजलोमां कहेल हे; ए वात श्रीडत्तराध्ययन तथा जगवती प्रमुख सूत्रोमां प्रसिद्ध हे.

हवे श्रग्जुर बेश्यादिक यकी ब्याशी पापप्रकृति वंधाय हे, ते पण श्रग्जुचिज जाणवी; कारण के श्रग्जुचिरूप कारणयी कार्य पण श्रग्जुचि थाय हे,एटखे श्रग्जुचिरूप कर्म वंधाय हे, श्रने ते थकी नरकादिकनी गति जीवने प्राप्त थाय हे. एम कारणे कार्य थाय हे.

हवे ए पूर्वोक्त जे जाव श्रग्जिच हे तेनी मूलो-रपित इव्य श्रग्जिच थकी थाय है; कारण के इव्य ते जावनुं कारण है, माटे प्रथम इव्य थकी श्रग्जिच टालवा विषे प्राणीमात्रने यल करवानी घणीज जरुर है. ते इव्य श्रग्जिचना श्रमेक प्रकार है. तेनो श्रिधकार श्रीहाणांग प्रमुख सूत्रोने विषे ज्यां श्रम-ज्जायनो विवरो कस्त्रो हे त्यांथी जाणी क्षेत्रो.

हवे ते समस्त असज्जायमां मोटी असज्जाय तथा समस्त अग्जुचिमां मोटी अग्जुचि अने समस्त आशातनार्चमां शिरोमणीजूत आशातना तेमज सर्वे पापबंधननां कारणोमां महत् पाप उपार्जन करवानुं मुख्य कारण तो स्नी ने जे क्तु प्राप्त थाय हे, अर्थात् जे पुष्पवती कहेवाय हे, एटखे स्नी ने अटकाव अथवा कोरे बेसवानुं थाय हे अने जेने खोकोक्तिए क्तुधर्म कहे हे, ते क्तुधर्म यथार्थपणे न पालवा विषेनुं हे.

ते विषेनो सर्व जनोने बोध यवा सारु संदेपमात्र शास्त्रोमांथी सार लड़ने पुष्पवती स्त्रीए केवी रीते वर्तवुं ते संबंधीना श्रधिकारनी वे सज्जायों जे पूर्वे लोकोपकारने श्रर्थे कोइ महापुरुषोए बनावेली हे ते तथा एज विषय संबंधी सिद्धांतोक्त ह गाथाई तथा श्रसज्जाइना श्रटकाव संबंधीनी सज्जाय,ए रीते बधा मलीने चार प्रथोनो समावेश करीने श्रा पुस्तक श्रमोए हपाद्युं हे, तो श्रा ग्रंथमां करेला उपदेश प्रमाणे जे पुष्पवती स्त्रीई पोते प्रवर्तशे, बीजाने प्रवर्तावशे तथा प्रवर्तनारने सहाय श्रापशे तेने श्रस्ंत लाज यशे, श्रने तेने परंपराए मोक्सुखनी प्राति पण श्रवश्य थशे.

जे प्राणी छा यंथमां करेला उपदेशथी विपरीत प्रवृत्ति करशे, छाथवा ए वातमां शंका कांद्रा करशे ते प्राणीनी लक्ष्मी तथा बुद्धिनो छा जवमां नाश थरो, अने सम्यक्त तो तेमां होयज क्यांथी ? अर्थात् नज होय. तेना घरना अधिष्टायिक देवो तेने मूकी जरो, अने ते जीव मिध्यादृष्टि, अनंत संसारी, छराचारी तथा कदायही जाणवो, केमके एम कस्या यकी देव, गुरु तथा धर्मनी मोटी आशातना थाय हे, ते वात आयंथ वांचवा थकी विवेकी जनोना ध्यानमां तरत आवशे.

वली हालमां विषम कालने विषे धूम्रकेतु यहना प्रताव थकी अत्यंत जम बुद्धिने धारण करनारा जिनप्रतिमाना देषी हे. वली स्रावी रीते प्रति-कूलपणे प्रवृत्ति करनारा लोको एम कहे छे के गुंबडा फूट्यानी माफक व्यथवा श्रन्य कोइ शरी-रमां विकार थाय तेनी पेरे क्तुवंती स्त्रीने अमक-वाथी कांइ पण श्रद्यचिपणुं प्राप्त यतुं नथी, कारण के शरीरनी मांहेली कोरे पण श्रशुचि जरेलीज हे, एवं तेर्नुं बोलवं अयोग्य हे, कारण के गुंबमां विगेरे जे फूटे वे तेने पण अस-ज्जाइ श्रीठाणांग प्रमुख सूत्रने विषे कहेलीज हे, श्रने शरीरनी अञ्यंतर जे अशुचि कहेवाय वे ते तो शरीर उपरथी मोहनो परित्याग करवाने छर्थे जावनारूप

वे, पण ए रक्तादिक जे वे ते शरीरथी बहार नीकछा विना एने अशुचि कहेवायज नहीं एवो नियम वे, कारण के श्रीपन्नवणाजी उपांगमां शरीर थकी बाहिर श्रशुचि नीकछा पठी तेमां चौद प्रकारना अशुचिस्थानीया जीवो उत्पन्न थाय वे, परंतु ते जीवो शरीरमां श्रशुचि रह्या थकी उत्पन्न थताज नथी. ए उपरथी स्पष्ट देखाय वे के शरीरनी श्रंद-रनी श्रशुचि कहेवायज नहीं.

क्तुवंती स्त्रीना रुघिरनी जे अग्रुचि हे ते श्रवांत प्रष्टताना विकारने धारण करनारी हे, कारण के शरीर संबंधी खघुनीति, वक्तीनीति, शुंक, श्लेष्म, रुघिर विगेरे जे श्रग्रुचि हे तेमां पण परस्पर घणो तफावत हे. तेम क्तुवाली स्त्रीनी श्रग्रुचि हे ते बीजी श्रग्रुचि करतां श्रवांत विशेष श्रग्रुचिमय हे. जेम सर्पादक केरी जनावरोनां मुखमां केर तो थाय हे, परंतु कोइकना करमवाथी तरत माणस मरणदशाने प्राप्त थाय हे, श्रने कोइकना करमवाथी तेने कचित् पीमा थाय हे, पण तेथी कशी हरकत थती नथी एवी तारतम्यता हे. वली श्रीहाणांग तथा जगवती प्रमुख सूत्रोमां एवं पण

कहे बुं वे के मनुष्यनुं जिल्हा छ जेर जे वे ते जेरनां पुजल छाडी द्वीप प्रमाणे वे छाने जघन्य यकी तो छानेक प्रकारे वे

ए रीते जेम फेरनां पुजलमां तारतम्यता हे तेम अशुचिनां पुजलमां पण तारतम्यपणुं हे ते कारणे पूर्वोक्त फेरने दृष्टांते पुष्पवती स्त्रीनी श्रशुचिनां जे पुजल हे ते सर्वोत्कृष्ट श्रशुचिमय जाणवां. एथी समस्त शुज लक्षण तथा शुज ग्रणोनो नाश थाय हे, माटे श्रशुचि श्रवस्य टालवी.

विशेषं नवी आवृत्तिमां प्रथम सज्जायनो जावार्थं तेमज बीजो केटलोएक सुधारो वधारो करी श्रमोए गये वर्षे उपावेल, परंतु तेनी तमाम नकल खपी जवाश्री तेनी श्रा बीजी श्रावृत्ति उपाववामां श्रावी हे. श्रा ग्रंथनी श्रंदर शास्त्रविरुद्ध उपायुं होय तो तेनी श्री समस्त संघ पासे क्षमा चाहीए डीए.

ली. प्रकाशक.

१ " आ ग्रंथमां कहेली हकीकत यथार्थ ने शास्त्रोक्त हे एम अमो खात्रीथी कही शकता नथी. "



# ॥ श्रीगौतमग्रुरुयो नमः ॥ ॥ अथ क्तुवंती स्त्रीनी सज्काय प्रारंनः॥

क्रुतुवंती नारी उपिरहरे रे, बीजे वस्त्रे न अमके ॥ सांके रात्रे नारी मत फरो रे, मत बेसजो तडके ॥ १॥

**CXX** 

श्रर्थात् जेने रजोदर्शन थयुं होय श्रथवा जे बाइने दूर बेसवानुं प्राप्त थयुं होय तेमणे नीचेनी बाबतोनो त्याग करवो. पोते जे वस्त्र पहेर्युं होय ते सिवायनां बीजां वस्त्रने श्रमकबुं नहीं तेमज सायंकाले श्रने रात्रीए एवी नारी छए बहार फरवा नीकलबुं नहीं, श्रने दिवसना जागमां तमके पण न बेसवुं.

मत जालवी नार मालनी रे, बांकवां धर्मवाम ॥ प्रज दर्शन पूजा सद्गुरु रे, वांदवा तजो नाम ॥ १॥

मात्तणने जोवी नहीं अने धर्मस्थानकोमां जवुं आववुं नहीं, कारण के तेथी आशातना थाय. प्रजुनां दर्शन करवां, प्रजुनी पूजा करवा देरासरे जवुं अने सद्गुरुने वांदवा जपाश्रयमां जवुं ए सर्व वाबतोनो क्रतुवंती बाइने माटे निषेध कर-वामां आव्यो है.

पिकमणुं पोसह सामायिक रे, देववंदन माला ॥ जलसंघ ने रथजातरा रे, दर्शन दोष ठाला ॥ ३॥ पिकमणुं, पोसह, सामायिक तथा देववंदन पण ते दिव- सोमां आवी बाइडेने माटे निषिद्ध हे तेमज जलयात्राना वरघोमामां के रथयात्राना वरघोमामां जाग लेवो ए पण कतु-वंती बाइडेने माटे नकामां पापनां जातां बांधवा जेवुं हे. रास वखाण धर्मकथा रे, व्रत पच्चस्काण मेलो ॥ स्तवन सज्जाय रास गहुं छली रे,धर्मशास्त्र म खेलो॥॥॥

ज्यां रास वंचातो होय,व्याख्यान चालतुं होय तथा धर्मकथा थती होय त्यां पण न जवुं. व्रत पचरकाण पण ते दिवसे न करवां, श्चने स्तवन, सज्जाय, रास तथा गहुंखी श्चने धर्मशास्त्र पण वांचवां नहीं.

लखणुं लखे नहीं हाथशुं रे, न करे धर्मचर्चा॥ धूप दीवो गोत्रकारणां रे, नहीं पूजा ने श्रर्चा॥ ५॥

कतुवंती बाइन हाथथी कांइ लेखनकार्य करी राके नहीं, तेमज धर्मचर्चा करवानी पण मनाइ करवामां आवी हे. धूप, दीवो तथा गोत्रने फारवां विगेरे धर्मकर्मो पण परिहरवां जोइए. पूजा अने अर्चामां पण जाग न लेवो.

संघ जिमण प्रजावना रे, हाथे देजो म क्षेजो॥ बिलदान पूजा प्रतिष्ठानुं रे, मत रांधीने देजो ॥६॥

ज्यां संघ जमतो होय, प्रजावना यती होय त्यां जवुं नहीं, श्रने हाथथी कांइ आपवुं के खेवुं नहीं. पूजा प्रतिष्ठा माटे रसोइ रंधाती होय अथवा निर्दोष बिदाननी रसोइ माटे तैयारी अती होय त्यां न जवुं अने पोताना हाथथी कांइ रांधी न आपवुं. पूर्वज पाणी न नामीए रे, देव देवी हनुमान ॥ फल फूल तेल सिंटूर तजो रे, धन धान्य सुदान ॥ ७॥

केटलीक वाइन पूर्वजोने पाणी पहोंचामवा वटवृक्तने पाणी पाय ने ते पण करवुं नहीं. देव, देवीन अने हनुमान आदि देवोने फल, फूल के सिंड्र चमाववा जवुं नहीं. धन धान्यनुं सुदान पण पोताना हाथे न आपवुं.

जणवुं गणवुं न वांचवुं रे, जोजन पाणी न पावुं॥ खग्न विवाह सीमंतनां रे, गीत गावा न जावुं॥ ए॥

रजोदर्शनना दिवसोमां जणवा गणवानुं तथा वांचवानुं, पण बंध राखवुं. कोइने जोजन पीरसवुं नहीं तथा हाथेथी पाणी पण न आपवुं. जे स्थले लग्न के विवाह थतो होय तथा सीमंतनो जत्सव थतो होय ते स्थले पण गीत गावा न जवुं.

धान्य सोकें निव जाटके रे, रांधणुं ते केम रांघे॥ दखवुं न खांमवुं जरमवुं रे, कर्म कठणद्युं वांघे॥ ए॥

धान्यने जाटकंवुं तथा धान्यमांथी कांकरा वीणवानुं काम पण तेटला दिवसो सुधी तजी देवुं. ज्यारे धान्यने जाटकवानी तथा सोवानी मनाइ करी हो, तो पही रांधणुं तो रंधायज केम ? अर्थात् रजस्वला बाइए रांधवा सींधवानुं काम न करवुं, तेमज काचा धान्यने पण स्पर्शन करवो. दलवानुं, खांमवानुं तथा जरमवानुं काम जे बाइ आ दिवसोमां करे हे ते बहु किन कर्मों छपार्जे हो. शाक नीख़ुं मत मोखजो रे, फख फूख चुखचाक ॥ राइतानी राइ वाटे नहीं रे, मूखी ख्रोषध पाक ॥ १०॥

कतुवंती बाइए लीखुं शाक समारवा बेसवुं नहीं. फल, फूलने स्वच्च करवा पण न बेसवुं. राइता माटे राइ वाटवी तथा श्रीषध के पाक तैयार करवा माटे जेसकीयां खांकवां ए पण निषिष्ठ हे खांक साकर गोल छुध दहीं रे, घृत तेल सुखकी है।। खट रसने मत फरसजो रे, वली धसाणुं नकी है।। ११॥

लांक, साकर, गोल, इध, दहीं श्रने घी, तेल तथा सुलकीनो स्पर्श न करवो. तीखुं, खारुं, गह्युं, कमवुं विगेरे षट् रसोने पण श्रमबुं नहीं. ते सिवाय तेनां जे पकान्न थतां होय तेनो स्पर्श न करवो जोइए.

पिन्ताने नहीं साधु साधवी रे, वस्त्र पात्र अनुपान ॥ रांक ब्राह्मणने हाथे आपे नहीं रे,दाणा लोट ने दान १२

साधु के साध्वी वहोरवा आवे तो क्तुवंती बाइए तेमने पोताना हाथथी वहोराववुं नहीं. साधु, साध्वीने वस्त्र, पात्र के अनुपाननी सामग्री पण स्वहस्ते वहोरावी न शके एटख़ुंज नहीं, पण गरीब ब्राह्मण आंगणे मागवा आवे तो तेने पण दाणा, खोट के एवुं बीजुं कांइ दान आपी शके नहीं.

गाय जेंस ढोर दोवां ने बांधवां रे, ठाण वासी छुं हाथे ॥ ढाश वलोणुं माखण तजो रे,श्रयाणुं निव ते श्राये १३॥ गाय श्रयवा जेंस विगेरे ढोरोने दोवां तेमज बांधवां नहीं.

कतुवंती बाइए पोताना हाथे ठाए के वासी हुं पए न करवुं. ठाश विद्योववानुं के माखए करवानुं पए तजवुं. तेमज अथाएं करवानुं होय ते पए न करवुं.

जल जरवाने जावे नहीं रे, ठांडे गार ने माटी॥ ठाम जटकंता दोष जपजे रे, वढवाम मेलो घाटी॥१४॥

पाणी जरवा जबुं नहीं. लींपण गुंपणनुं काम पण एवी बाइथी थइ शके नहीं. एठां वासणो मांजवाथी पुष्पवंती बाइ दोषमां जराय हे. स्त्रावा दिवसोमां कोइनी साथे गाढ क्खेश कंकास पण न करवो.

जरत चित्रामण मत जरो रे, रंगराग मत करजो ॥ जोणुं रोणुं वगोणुं सदा रे, तमे जोवाने वरजो॥ १५॥

जरत के चित्रामणनुं काम पण क्रतुवंती नारी चए परिहरवुं. ज्यां जत्सव—श्रामोद श्रतो होय, किंवा ज्यां रंग—राग चालतो होय त्यां न जवुं. तेमज जोणुं, रोणुं श्रने वगोणुं ए हमेशां क्रतुवंती बाइए तजवां जोइए.

पापम वमी ने सीधावमी रे, जली खांड विखेरो॥ शोव सुंवाली ने फाफमा रे, वणतां दोष घणेरो॥ १६॥

विवाहप्रसंगे अथवा एवाज बीजा जत्सवसमये बाइर्ज पोतपोतानां सगावालांजमां पापम, वमी, सीधावमी तथा शेव, सुंवाली श्रने फाफमा वणवा जाय ठे तेम कतुवंती स्त्री-र्जंप जवुं नहीं; कारण के एवी अवस्थामां शेव विगेरे वणवामां धणो दोष शास्त्रोमां कह्यो ठे. सांधण सुंधण शीवणुं रे, म करो जोइ विचारी ॥ होर खाण बाफवा मत मेंखजो रे,रमत बाजी निवारी १९

शीववुं सांधवुं पण पुष्पवंती बाइन्रेए परिहरवुं. जाणी जोइने एवा दोषमां जरावुं नहीं. ढोरने माटे जे खाण बाफवामां आवे छे ते पण न बाफवुं अने बीजी रमतो पण त्यजी देवी.

परघर जमवा उजमे रे, मत बेसजो पांते ॥ हाथे जोजन पीरसे नहीं रे,न करे गोष्टि एकांते॥ १०॥

जत्सव दरिमयान कोइने त्यां जमवानुं होय त्यां वधी बाइड एक पंक्तिए बेठी होय तेमनी साथे क्रतुवंती स्त्रीए श्रमीने बेसवुं नहीं. क्रतुवंती बाइ पोताना हाथे कोइने पीरसे पण नहीं तेमज कोइनी साथे एकांतमां वार्तादाप पण न करे.

दातण श्रंजन विकेपने रे, वस्त्राजरण स्नान ॥ दर्पण फूल जोजन राते रे, पाणी मेलजो पान ॥ १ए॥

दातण, श्रंजन, सुगंधी जन्योनुं स्वदारीरे विलेपन, स्नान तथा सुंदर वस्त्राजरण न करे, कारण के ए वधा श्टंगारो हे अने ते आवा अवसरे सजवा ए अयोग्य हे. दर्पणमां मुख जोवुं, फुल्लनी माला धारण करवी, रात्रीए आहार करवो तेमज पाणी पीवुं विगेरे त्याज्य हे.

बिनीयाल दाल तुम मत करो, मत बेसजो हिंमोले॥ धाणी दालीया म शेकजो रे, मुख म जरो तंबोले॥२०॥ दालने ठमवामां आवे हे, अथवा तो दालने फोतरांथी मुक्त करवामां आवे हे, ते कार्य पण रजस्वला बाइए न करवुं. हिंमोले बेसवानी पण मनाइ हे. तंबोल खावुं के धाणी दालीया शेकवा ए पण अविधेय हे.

खत पत्र हुंडी न वांचवी रे, नामुं क्षेखुं न सूर्फे ॥ इसवुं न बोखवुं दोमवुं रे, पुष्ट ष्टाहार न जुंके ॥ ११॥

खत पत्र के हुंमी वांचवी नहीं. तेमज नामुं लेखुं कर-वानुं पण काम न करवुं. हसवुं, बोलवुं तथा दोमबुं विगेरे कर्मो पण परिहरवां. पौष्टिक स्त्राहार न करवो.

धातुपात्रे जोजन तजो रे, माटी काष्ट पाषाण ॥ जोयण सोयण तेहमां रे, खाट पाट म जाण ॥ ११ ॥

धातुपात्रमां जोजन करवुं नहीं. माटीनुं, लाककानुं के पाषा-णनुं पात्र होय तो तेमां जोजन करीने पात्र क्यांइ परठवी देवुं. विचार करतां एम लागे ठे के धातुपात्र प्राण्ने संग्रही शक-वानी शक्ति धरावे ठे अने तेमां आकर्षक गुण रहेलो ठे, तेशी तेमां जोजन करवानी क्रतुवंती वाइने मनाइ करवामां आवी हशे. सुवुं होय तो जोंय जपर सुवुं, तेमां पण खाट पाटनो त्याग करवो.

बुंद कावो तमे मत पीयो रे, मत यो हाथ ताली ॥ रासमंग्रल मत खेलजो रे, नारी होय धर्मवाली॥१३॥

क्रतुवंती बाइए बुंदनो कावो करीने पीवो नहीं. अर्थात् जे-टलां ज्तेजक पीणांज ठे ते वर्जवां. परस्पर हाथनी ताली देवी नहीं तेमज खेवी पण नहीं. रासमंग्रस के ज्यां अपनेक स्त्री उ मलीने रास रमे हे तेमां जाग खेवा न जबुं.

साजन श्रावे मस्रो नहीं रे, बुंग्रणां सीयो केम ॥ नग्न बालक धवरावीए रे, घरे मत फरो तेम॥ १४॥

साजन श्रावे तो तेने मलवुं नहीं ज्यारे मलवानो निषेध श्रयो त्यारे तेनां लुंजणां के जिवारणां तो लेवायज केम ? बालकने धवराववुं होय तो नग्न करीने धवराववुं, श्रश्नात् तेना श्रंग जपर वस्त्र रहेवा न देवुं घरमां चोतरफ फस्चा करवुं नहीं मत बेसजो माथुं ग्रंथवा रे, मत घालजो तेल ॥ नावुं न धोवुं सिंद्सर सेंथो रे, मस्तक जेलवुं मेल ॥१५॥

माथुं गुंथवा बेसवुं नहीं, तेमज तेल पण माथामां नाखवुं नहीं. न्हावानुं तथा घोवानुं त्यजी देवुं श्वने सेंथामां सिंङ्र न जरवो तथा माथुं पण न स्रोलवुं.

क्तुवंती हाथे जल जरी रे, देरासरे जो आवे ॥ समकितबीज पामे नहीं रे, फल नारकीनां पावे ॥२६॥

क्तुवंती नारी जो हाथमां पाणी खड़ने देरासरे जाय तो समिकतनुं बीज तेने प्राप्त थाय नहीं, माटे एवी स्त्रीए पवित्र देरासरमां पग पण मूकवों नहीं. उतां जो कोइ देरासरे आवे तो तेने नारकीनां छःखो सहन करवां पके.

नव केत्रमें रज खाखनी रे, नारी वही अजाणे॥ ब्रंडण जुंमण ने सापिणी रे, पापिणी होये प्राणे॥ २९॥ जे नव हेत्रो पवित्र कह्यां हे तेमां क्तुवंती नारीथी श्रजा-णतां रज पनी जाय तो ते पापिणी नारीने प्राण जतां खुंनण, ज़ंनण के सापिणीनो श्रवतार खेवो पने हे.

क्रुतवंती यात्राए चालतां रे, मत वेसजो गाडे ॥ संघतीर्थ फरस्यां थकां रे,पक्शो पाताल खाडे ॥ २०॥

क्रतुवंती नारीए यात्रार्थे जती वखते गामामां न वेसवुं, अने जो एवी स्थितिमां कोइ संघतीर्थने स्पइयी तो जाएजो के पाताखना खामे पमवुं पमशे; अर्थात् बहु अशातावेदनीय कर्मो जोगववां पमशे.

चोवीश प्होर एकांतमां रे, चोथे दिन नावुं धोवुं॥ पुरुष बीजो नव पेखवो रे,मुख दर्पणमां न जोवुं॥१ए॥

चोवीश प्होर एटले त्रण दिवस रजस्वला बाइए एकांतमां रहेवुं, चोथे दिवसे न्हाइ धोइ पित्रत्र श्रवुं, परपुरुषने जोवो नहीं तेमज दर्पणमां मुख पण न जोवुं.

मूत्र ढांटे पावन गायनुं रे, घरमां सहु ठामे ॥ छीपे घूंपे धोवे दिन चोथे रे, जोजन रांधवा पामें ॥३०॥

चोश्रे दिवसे घरमां बधे गोमुत्र ठांटवुं, कारण के ते बहु पवित्र खेखाय ठे, अने तेना वके अशुद्धिनो नाश आय ठे. ते जपरांत घरमां खींपण करी बधे शुद्धि करवी जोइए. आटखुं कर्या पठी ते बाइ रसोमामां जइ रसोइ करी शके.

द्रीन पूजा दिन सातमे रे, जिनजक्ति करवी॥ व्रत पञ्चकाण वलाण सुणो रे, पुष्य पालली जरवी ३१

सातमे दिवसे ते बाइ जिनमंदिरमां जवाने माटे योग्य बनी शके; अर्थात् सातमे दिवसे जिनजिक्तनो अधिकार तेने प्राप्त थाय. ते पहेलां नहीं. व्रत पच्चरकाण करवां तथा व्याख्यान सांजलवुं ते सातमा दिवसे करी शके पुष्यनी पालखी जरवी होय तोपण तेने माटे आ सातमो दिवसज योग्य गणाय.

सोल शणगार सजी जला रे, छावे जरतार पासे ॥ गर्ज छातुपम उपजे रे, संपूर्ण नव मासे ॥ ३१ ॥

आवी नारी सोखे शृंगार सजी पोताना पित पासे आवे. आवी रीतनी विधिने मान आपनारी स्त्रीने पेटे जे गर्ज रहे ते अनुपम आय, अने बराबर नव मासे सुंदर संताननी प्राप्ति आय.

दिन सोखमे क्तुवंतीनो रे, गर्न उपजवा काल ॥ चोथे दिवसे गर्न उपजतां रे, अब्पायुष लहे बाल३३

क्तुवंती नारीने सोखमे दिवसे गर्ज छपजवानो काल प्राप्त श्राय हे. सोखमा दिवसने बदले जो चोश्रे दिवसे गर्ज रहे तो ते संतान बहु दुंकी मुदत सुधी जीवीने मरी जाय, अर्थात् अट्यायुषी श्राय

षट छाठ दश बार चौदमे रे, सोखमे दिवसे गाज ॥ नंदन उपजे ग्रणनिलो रे, रूप रंग जशलाज ॥ ३४॥

ठ, आठ, दश, बार, चौद अने सोलमे दिवसे अर्थात् बेकीना दिवसे जे गर्ने धारण याय ते रूप-गुणमां अनुपम तथा यशस्वी थाय, एम बुद्धिमान् पुरुषोनुं मानवुं ठे. दोइ जाम रात्रे जोग तजो रे, वीर्ये उपजे बेटी॥ दिवसनो जोग निर्वलो रे, जल्ली रातमी जेटी॥ ३५॥

रात्रीना वे प्रहर वीत्या पठी जोग करवो नहीं. दिवसे जोग करवानो तहन निषेध ठे. रात्रीनो अवसरज योग्य गणाय ठे. वे प्रहर पठी जोग करवाथी पुत्री जत्पन्न थाय एम कहेवानो आज्ञाय होय तेम जणाय ठे.

बारची मांनी पचावन्ने रे, वर्षे जणे नारी ॥ नरचोवीशनारीसोखनी रे,सुतहोयसुखकारी॥३६॥

बार वर्षनी ऋंदरनी तथा पंचावन वर्ष जपरनी नारी साथे जोग करवो अनुचित हे, कारण के तेनाथी पुत्रोत्पत्ति थती नथी. नर चोवीश वर्षनो अने नारी सोख वर्षनी होय;तो तेनाथी जे पुत्र जत्पन्न थाय ते बहु सुखकारी थाय.

पुरुष वीर्य बहु बेटमो रे, बेटी रक्ते वखाणुं ॥ सम जागे नपुंसक नीपजे रे, प्रज्ञ वचने हुं जाणुं ॥३७॥

पुरुषनुं वीर्य वधारे होय तो पुत्र जल्पन्न याय, अने स्त्रीनुं रक्त वधारे होय तो पुत्री जल्पन्न याय; वीर्य अने रक्त जनय सम जागे होय तो नपुंसक संतान प्राप्त याय; आ वात प्रजुना शब्दोमां होवाथी हुं तेने मानपूर्वक वखाणुं हुं.

मध्यम गर्ज होय रेवतीमां रे, जन्मे मूखक मूल ॥ श्रवणपंचक दश रोगधी रे, गर्ज फूल श्रनमूल ॥ ३०॥

रेवती नक्त्त्रमां जो गर्ज रहे तो ते मध्यम थाय, मूख नक्-त्रमां जन्मे तो जत्तम थाय, अने जो अवएपंचकमां जन्मे तो दश रोगथी पूर्ण थाय, श्रथवा तो गर्जनुं फूख श्रनमूख-मूख विनानुं थाय.

गर्ज जन्म छाजीचीमां रे, पुत्र थाय तो कर्मी॥ इस्त सूययोगे जन्म जलोरे, सुत होय सुधर्मी॥३७॥

श्रजिति नक्षत्रमां बालक गर्जमां स्त्रावे तो ते पुत्र कर्मी थाय. इस्त नक्षत्रनी साथे सूर्ययोग थये उते जन्म थाय तो ते बहु सारो स्त्रने धार्मिक थाय.

मंगलनो जन्म श्रश्खेषां रे, वेटी बहुत रीसाल ॥ पूनम मूल सूर्यवारनो रे,चटको चोर ठीनाल ॥४०॥

मंगलवारे श्रश्लेषामां जन्म थाय ते पुत्री बहु रीसाल थाय. मूल नक्तत्र श्रने सूर्यवार तथा पूर्णिमाने दिने पुत्र जन्मे ते लुचो, चोर के जीनालवो थाय.

ज्येष्टानुराधा रोहिणी विशाखा रे,मृग अश्विनी जरणी गर्ज पडे सुआवडे रे, पुरुष मेखे कां परणी ॥४१॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, विशाखा, मृगशिर अश्विनी अने जरणी नक्षत्रमां गर्ज रहे तो ते कां तो पनी जाय, अथवा सुवावमना वखतमां तेनो धणी स्त्रीने तजीने जाय (अर्थात् मरण पामे).

गर्ज जन्म पूर्वा नक्तत्रमां रे, घणुं बालक ढीलो ॥ वादी प्रमादी उत्तरा तणो रे, विद्यावंत ठबीलो ॥ ४१॥ पूर्वा नक्त्रमां जे बालक जन्मे ते घणो ढीलो बालक थाय. जत्तरा नक्षत्रमां जन्मे ते वादी किंवा प्रमादी श्रयवा सुंदर श्रने विद्यावंत थाय.

पंच मासे नारी गर्जणी रे, मेले पुरुषनो संग ॥ दोष लागे ने बालक जांगे रे, जाग रोग प्रसंग ॥ ४३॥ गर्ज धारण कर्या पठी पांच मासे गर्जिणी स्त्रीए पुरुषनो संग त्यागवो जोइए. ठतां जे दंपती जोग करे ते जोग अनेक रोगने जत्पन्न करे, तेमज गर्जपातनो पण दोष लागे; कारण के पांच मास पठीना जोगश्री गर्जने घणी इजा श्रवानो जय रहे हे. छठे मासे बालक श्रागरु रे, सातमे होये कोड ॥ रांक तोले मास श्राठमे रे, नवमे जन्मतां पोड ॥ ४४॥

ठें मासे जे बालक जन्मे ते बहु लांबो वखत जीवे नहीं. सातमे मासे जन्मे ते कोढी च याय, आठमे मासे जन्मे ते दीन, इःखी अने रोगीष्ट याय तथा नवमे मासे जन्मे ते प्रौढ याय. पंच बोले गर्जे उपजतो रे, जरतार विना साचुं ॥ पुरुषजोगे पन्नर जेदशुं रे, गर्ज यावानुं काचुं ॥ ४५॥

जरतार विना पांच जेदे करी गर्ज रहेवानुं कहां हे अने पुरुषनो योग हतां १५ जेदे गर्ज रहेतो नथी. आ पांच अने पंदर जेद कहा ते गुरुगम्यथी अथवा शास्त्रोक्तथी समजी देवा. पडवे ने हु अगीआरशे रे, जन्म बालक जोलो ॥ बीज सातम ने बारस तणो रे, जन्म थाय तो गोलो ४६ पस्वे, हु के अगीआरशने दिवसे जन्म श्राय तो ते ते

बातक बहु जोलो थाय, अने बीज, सातम के बारसने दिवसे जन्मे ते गोलो अर्थात् दुचो अने मूर्ल थाय.

वल्ली त्रीज छाठम ने तेरहो रे, पुत्र होय सुजोगी ॥ चोथ चौदश पुत्र नवमीनो रे, कमवो कोधी रोगी ॥४९॥

त्रीज, आठम अने तेरशने दिवसे जे वालक जन्मे ते सारा जोग जोगववावालो थाय. चोथ, चौदश अने नवमीए जे पुत्र थाय ते कमवो, कोधी अने रोगी थाय.

पांचम दशम ने पूनमनो रे, जन्म होय जाग्यशाखी ॥ जन्म्यो ख्रमासे तो उखटुं रे, मूर्ख महोटो ते हाखी॥४०॥

्यांचम, दशम ने पूनमने दिवसे जे पुत्र जन्मे ते बहु जाग्य-शाखी थाय, अने तेथी छखटी रीते अर्थात् अमासने दिवसे जन्मे ते मूर्ख थाय, एम समजवानुं हे

मीन लग्न मेष वृषनो रे, पुत्र धारजो गलीयो ॥ लग्न मिश्रुन कर्क सिंहनोरे, बुद्धिवान ने बलीयो ॥४ए॥

मीन, मेप अने वृष राशिमां जे पुत्र जन्मे ते गलीया बखद जेवो ढीखो थाय, अने मिथुन, कर्क अने सिंह राशिमां जन्मे ते बुद्धिवान् थयानी साथे बखवान् पण थाय.

खन्न कन्या तुल दृश्चिकनो रे, पुत्र कुल मांहे दीवो ॥ धन मकर लग्न कुंजनो रे, घणुं जशनामी जीवो ॥ ५०॥

कन्या, तुला अने वृश्चिक राशिमां जे पुत्र जन्मे ते कुलमां दीपक समान जञ्ज्वल थाय अने आला कुटुंबने अजवाले, तेमज जे पुत्र धन, मकर अने कुंज राशिमां जन्मे ते घणो जशनामी तथा दीर्घायुषी थायः

सूर्य मंगलवारे जन्मीयो रे, वालक रोगीयो तापी॥ शनि सोम शुक्र टाढो सदारे, बुध गुरु हे प्रतापी॥५१॥

रिववारे श्रमें मंगलवारे जे जन्मे ते रोगी तथा कोधी श्राय, शनिवार, सोमवार श्रमें शुक्रवारे बालक जन्मे ते शांत थाय, श्रमें बुधवारे तथा गुरुवारे जन्मे ते महा प्रतापी श्राय.

पुत्र उदासी उद्देगमां रे, लाजामृत शुज वेला ॥ रोगे रोगी कोधी कालमां रे, चलमां चोकस चाला ५१

जेदग चोघनीयामां जन्मे ते बालक जदासी थाय, लाज, अमृत अने शुज चोघनीयामां जन्म थाय ते बहु सारो लेखाय हे, रोग चोघनीयामां रोगी अने काल चोघनीयामां कोधी तथा चल चोघनीयामां चोकस प्रकारना चाला करनारो पुत्र थाय-रांध्युं जोजन क्रतुवंती तणुं रे, जाणे लाडु सवाद ॥ जोग जोग माठा मखे रे, रोग शोक प्रमाद ॥ ५३॥

क्रतुवंती नारीए जे जोजन रांध्युं होय ते जोजनमां खाकु जेटखो स्वाद मानी जे मनुष्य छाहार करे तेने छनेक प्रकारना माठा जोगोनो जोग प्राप्त थाय, तथारोग, शोक छने प्रमादनो पण तेनामां पार न रहे.

वेद पुराण कुरानमां रे, श्री सिद्धांतमां जाख्युं ॥ कृतुवंती दोष घणो कह्यो रे, पंचांगे पण दाख्युं ॥ ५४॥ वेद, पुराण तथा कुरानमां पण लख्युं वे के कृतुवंती नारी साथे आप लेनो व्यवहार राखवाथी घणुं पाप लागे हे. आ वातने आपणा जैन सिद्धांतो तथा पंचागी पण टेको आपे हे. पहेले दाहाडे चांना लिणी कही रे, ब्रह्मघातक बीजे ॥ धोबण त्रीजे चोथे दिवसे रे, ग्रुट्ट नारी वदीजे ॥ ८८॥

क्रतुवंती नारीने प्रथम दिवसे चांमाति जेवी समजवी, बीजे दिवसे ब्रह्मघातक जेवी समजवी अने त्रीजे दिवसे घोवण समान त्रखववी. चोथ दिवसे न्हाइ घोइने शुद्ध श्राय त्यारे पवित्र त्रेखववी.

माकण शाकण कामणना रे, मंत्र पामशो खोटा ॥ देवनुं साधन श्रथ्यमशे रे, मत वाखजो गोटा ॥ ५६॥

जो रुतुवंतीनो संसर्ग राखशो तो नाकण, शाकण अने कामणना मंत्रो खोटा पामशो अने कोइ देवनुं साधन हशे तो ते पण आथमी जशे, माटे ए बाबतमां गोटा वाळशो नहीं.

क्रतुवंतीनुं मुख देखतां रे, एक श्रांबिख दोष ॥ वातकी करतां रागनी रे, पांच श्रांबिख पोष ॥ ५७॥

कतुवंती नारीनुं मुल मात्र निरखवाथी एक आंबिखनुं प्राय-श्चित्त खागे हे, अने रसपूर्वक एटले के जो होंशथी तेनी साथे वात करवामां आवे तो पांच आंबिल करवां जोइए. आटलुं प्रायश्चित्त शास्त्रमां कह्यं हे.

क्रुतुवंती श्रासने बेसतां रे, सात श्रांबिल साचां ॥ ठठबारतास जाणे जम्या रे,नव गढ होय काचा ॥५०॥ क्रतुवंती नारीना आसन जपर वेसवाथी सात आंविखनी आखोयण खेवी पर्ने हे, अने तेने जाणे जमवाथी बार ह्या अ आखोयण आवे हे अने शीयखना नव गढ कह्या हे ते शिथिख अड़ जाय हे.

क्रुतुवंती नारीने श्राजङ्यां रे, ब्रुटनुं पाप खागे ॥ वस्तु देतां क्षेतां श्रुटमनो रे, कहो केम दोष जागे॥५॥

कतुवंती स्त्रीने अमवाथी उच्नुं पाप लागे ठे, अने वस्तु आपवा लेवाथी अप्तमनो दोष आवे ठे. आवो दोष कहो बीजी ही रीते छूर थाय ?

खाधुं जोजन नारी हाथनुं रे, जव खाखनुं पाप ॥ जोग जोग नव खाखनुं रे, वीर बोखे जबाप॥६०॥

श्रावी नारीना हाथनुं जो जोजन करवामां श्रावे तो लाख जब पर्यंत संसारमां जमण करवुं पमे, श्रानेतेनी साथे जोग कर-वामां श्रावे तो नव लाख जब करवा पमे. श्रा वात वीर प्रजुए एक प्रश्नना जत्तरमां जणावी हे.

साधु साख नारी जोगथी रे, जोजन पाप अघोर ॥ नरक निगोदमां जव अनंता रे, कर्म बांधे कठोर॥६१॥

साधु पुरुषनी साङ्गीए एम कहीए ठीए के एवी नारी साथे जोग करवाथी श्रने जोजन करवाथी श्रघोर पाप बंधाय छे, श्रने नरक-निगोदमां श्रनंता जब जमवा ठतां तेनो बटको श्रतो निथी, कारण के ते एवां कठोर कमों बांधे छे. क्रुतुवंती खातां जोजन वध्युं रे, ढोरने खावी नाखे॥ जव बार जुंना करवा पडे रे, चंद्र शास्त्रनी साखे॥६१॥

चंद्र शास्त्रनी साहीए कहेवुं पमे ठे के क्रतुवंती स्त्रीना जाणामां जे जोजन वध्युं होय ते जो ढोर ढांखरने खावा देवामां स्त्रावे तो बार जव जुंमी रीते जमवा पमे.

रजस्वला वहाणे समुद्रमां रे, वेसतां वहाण डोले ॥ जांगे कां लागे तोफानमां रे, माल वामे कां बोले ॥६३॥

रजस्वला बाइ जो वहाणमां बेसे तो ए वहाण पण मोलवा लागे हे, अने कां तो वचमां जांगी जाय हे के तेने तोफान लागे हे, तेथी अंदरनो माल पाणीमां वामवो पमे हे अथवा वहाण डूबी जाय हे.

खख जव जाण छाजाणमां रे, खघु वम जव छाठ॥ जव खाख ने वाणुं घातमां रे, एम शास्त्रनो पाठ॥ ६४॥

जपर कह्यो ते दोष जो जाएतां याय तो लाख जव अने अजा-एतां पए यह जाय तो नाना मोटा आठ जब करवा पर्ने, अने एक लाख ने वाणुं घातो सहन करवी पर्ने, एवो शास्त्रनो पाठ हे. धर्मवाही नारी नाइ धोइ रे, संगमें जोजन खाय ॥ पुत्ररत्न पामे संपदा रे, देवलोकमां जाय ॥ ६५ ॥

धर्मवाली बाइ चोथे दिवसे न्हाइ धोइने सी साथे जोजन करे. आवी बाइने जे पुत्र थाय ते रत्न जेवो थाय अने बहु संपत्ति प्राप्त करे एटखुंज नहीं, पण एवी बाइ आयुष्य पूरुं थये देवलोकमां जाय. कमला राणी प्रजु वांदतां रे, बार लाख जब कीधा॥ मालण फूल छटकावमां रे, लख जब फल लीधां॥६६॥

कमला राणी कतुवंती हती त्यारे जूलश्री तेणे प्रजुने वंदना कीधी आश्री करीने तेने बार लाख जब सुधी संसारअटवीमां परिच्रमण करवुं पड्युं. एक मालणे एवीज स्थितिमां फूल वेच्यां, तेशी तेने एक लाख जब करवा पड्या

हुंढ जाणे फूटुं गुंबहुं रे, धर्माधर्म विरोध ॥ शास्त्र विनामते माचता रे, खहे नरक निगोद ॥ ६९॥

ढुंढी आ लोको एम कहे हे के ए तो फुटेला गुंबना जेवुं हे, तेथी ते धर्माधर्ममां विरोधरूप नथी, पण आम कहेनारा है शास्त्रनी साही विना पोताना मत प्रमाणे बोले हे, तेथी करीने तेर्ड नरक निगोदना अधिकारी थाय हे.

एम सांजली क्रुवंतीनो रे, अधिकार आनंदे ॥ घरमांहे सावचेतराखजो रे, जाख्युं वीर जिएंदे ॥६०॥

आ प्रमाणे कतुवंती नारीनो जे अधिकार कहाो छे तेतुं आनंदथी बरावर मनन करी स्मरणमां राखवो अने ते प्रमाणे बहुज सावचेतीथी घरमां वर्त्तन राखवुं. ए प्रमाणे कहेखुं छे. निज धर्म पालवा नारी है रे, जली सज्जाय सुणजो ॥ धोल यामे तपागल्लमां रे,श्रावक श्राविका सुणजो॥६ए॥

पोतानो धर्म पालवानी रुचिवाली वार्ए आ सज्जायनो सारी रीते अत्यास करवो. आ सज्जाय ध्रोल गाममां लखायेली हे, तेथी धोखनिवासी तपगञ्चना श्रावक तथा श्राविकार्जने संबोधीने कहे हे के हे बाइर्ज तथा जाइर्ज! स्ना सज्जाय सारी रीते सांज्यजो

संवत् छढार पांसठमां रे, दीवाखी खटकाखी ॥ कहे खीमचंद शिवराजनो रे, करजो धर्म संजाखी ७०

श्चा सज्जाय संवत् १०६५ मां रची हे, श्चने प्रसंग पण् दीवालीनो हतो. लखनार पोतानुं नाम श्चापतां कहे हे के हुं शिवराजनो पुत्र खीमचंद कहुं हुं के सौ कोइ पोतपोतानो धर्म बराबर संजालीने पालजो.

॥ इयथ बोतिजास प्रारंजः ॥ राग रामग्री ॥

॥ वीर जिनेश्वर पाय प्रणमीने, प्रणमीए शारद माय रे ॥ बोतिनिवारण जास जणेशुं, जेम पापमल जाय रे ॥ बोति निवांधी वंश न वाधे, धर्म कर्म निव कोय रे ॥ एम जाणीने बोति निवारो, जेम वांबित फल होय रे ॥ बो० ॥ १ ॥ जे हिंसादिक महा-मल बोति, ते लोपे जीव ज्योति रे ॥ ते तो टले तपानल तापे, जो द्यारस व्यापे रे ॥ बो० ॥ १ ॥ बोति मूर्त्त स्त्रीधर्मिणी जाणो, तेहनो जय घणो आणो रे ॥ जेहनो दोष दीसे निज नयणे, वली कह्यो जिनवयणे रे ॥ बो० ॥ ३ ॥ जेह बोति धातु- रस फूटे, पीठ कणकवांक त्रृटे रे ॥ विकसी घाय तिमिक बहु लागे, गमगुंबम रोग जागे रे ॥ छो० ॥ ४ ॥ दीवें श्रंध होय नेत्र रोगी, षंढ होये संजोगी रे॥ गंधे खन्नादिक कइमल थाये, पापकी पनी धाबखाये रे ॥ ठो० ॥ ए ॥ वेमी बुडे जेहने संगे, जावा रंग उरंगे रे ॥ स्नानजले वेल वृक्त सुकाये, फूल फल निव याये रे ॥ ठो० ॥ ६ ॥ एम जाणी बीजे घरे राखो, तेइद्यं जाष म जाषो रे॥ वस्तु वानी श्राप्तकवा न दीजे, घूर थकांज रहीजे रे॥ **ढो॰ ॥ ७ ॥ पुष्यवंत सुणो सविचारी, एह दोष होय** जारी रे ॥ जुत्तवा तो जपवास करीजे, स्नान करी बोलीजे रे ॥ ठो० ॥ ७ ॥ बीजे दिन स्नान जब कीजे, तव वस्त्र जींजवीजे रे॥श्रवर वस्त्र धोयांपहेरीजे,जोजन निरस बीजे रे॥ बो०॥ ए॥ जेले जाजने जोजन कीजे, ते घर मांहे न लीजे रे ॥ केहने ते अडवा निव दीजे, जूमि मांहे बूजीजे रे ॥ ठो० ॥ र० ॥ नदी सरोवरे स्नान न कीजे, तेह मांहे शोच न खीजे रे ॥ तेणे याय अपवित्र पाणी, इःख सहुनी खाणी रे ॥ ठो० ॥ ११ ॥ त्रीजे चोथे दिन एम पालो, ठोति

पाप पखालो रे ॥ पांचमे दिन पवित्र होइ आवो, जेम पुर्ल्यफल पावो रे ॥ छो० ॥ ११ ॥ जेम वन मांहे द्वे जीव बले, तेम तिहां तेणे जले रे ॥ अण-गल नीर निव खरचीजे, जीव यतन घणुं कीजे रे ॥ बो० ॥ १३ ॥ एम न राखे जे नर निज गोरी, तेह पापरथ धोरी रे ॥ एम न रहे जे नारी असारी, ते पामे इःख जारी रे॥ ठा० ॥ १४ ॥ शाकिनी जेम कुटुंबने खाये, नरक मांहे ते जाय रे ॥ इःख देखे ते त्यां अति घणां, वेदादिक वध बंध तणां रे ॥ ठो० ॥ १५ ॥ सापिणी वाघणी रींठणी सिंहणी, इयालिणी ग्रुनी होय कागणी रे ॥ श्रग्रुद्ध योनिमां पढ़ी डुःख पामे, जवोजव पातक ठामे रे ॥ ठो० ॥ १६॥ एम जाणी राखे नर नारी, जेह रहे सबि-चारी रे ॥ ते सहु सुख जोगवे संसारी, पढ़ी मुक्ति वरे नारी रे ॥ ठो० ॥ १९ ॥ एम जाणी स्त्रीधर्म-मल टालो, निज मन मेल पखालो रे ॥ ब्रह्म-शांतिनी वाणी संजालो, निर्मलाचार व्रत पालो रे ॥ ठो० ॥ १७ ॥ इति सज्जाय ॥

#### ( খণ )

## ॥ अथ सूतकनी सज्जाय खिरूयते ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ सरखती देवी समरुं माय, सद्गुरुने वर्खी खाग्रं पाय ॥ विचारसार प्रंथशी कहुं, ते परमारथ जाणो सहु ॥ १ ॥ सूतक तणो हुं कहुं विचार, सांजलजो नर नारी सार ॥ जेने घैर जन्म चाय ते जाण, दश दिवसनुं कह्युं प्रमाण ॥ १॥ एटलो पुत्र जन्मनो सार, पुत्री जन्मे दिन अगीआर ॥ मृत्यु घरनुं सूतक दिन बार, ते घेर साधु न व्होरे आहार ॥ ३॥ ते घरनुं जल छित्र जाण, जिनपूजा नव सूजे सुजाण ॥ एम निशीयचूर्णीमां कहाो, ए तत्त्वार्थ गुरुमुखयी बह्यो ॥ ४ ॥ निशीय सोबमे उदेशे सार, ए महंत मुनि करें छणगार ॥ जन्म तथा मरण घर जाणो सह, डुगंठनिक गुरुमुखर्यी लहुं ॥ ५ ॥ व्यवहार जाष्यमां वली, जाषे सूधा साधु केवली ॥ मलयगिरिकृत टीका जाण, दश दिन जन्म सूतक परिमाण ॥६॥ हवे सांजलो जिनवाणी सार, एम जाषे सुधा छाणगार ॥ विचारसार प्रकरणे सार, एम जावे श्रीजिन गणधार ॥ ७ ॥ मास एक प्रसवतीने धार, प्रतिमाद्शेन न करे विचार ॥ दिवस चालीश जिनपूजा सार, करे स्त्री ए व्यवहार ॥ ७ ॥ साधु पण नव लीए श्राहार, तिहां सूतके कहे श्रणगार ॥ तेना घरनां माणस होय, जन्म मरणनुं सूतक जोय ॥ ए ॥ न करे पूजा दिन बार ते जाण, समजी क्षेजो चतुर सुजाणे ॥ मृतकने श्रमकणहारा कह्या, चोवीश प्होर ते साचा सद्या ॥ १०॥ पिकक्रमणादिक न करे जाएँ, एम जाखे हे त्रिजुवनजाए ॥ वेशना पालटहारा कह्या, स्राठ प्होर ते साचा सदद्या ।। ११ ॥ मृतक कांध देनारा जाण, अन्य यंथथी खेजो सुजाण ॥ सोल प्होर पिकक्षमणुं नव कथी, ए जिन जाख्यो श्रागम बह्यो ॥ १२ ॥ जन्मनुं सूतक दश दिन सार, जन्मने थानक मास विचार ॥ घरना गोत्रीने दिन पांच, सूतक टाखे ग्ररु जाले साच ॥ १३ ॥ जन्म हुर्ज तेहीज दिन मरे, वली देशांतर फरतां मरे॥ संन्यासी अनेरो मृत्युक होय, सूतक दिन एक जाणो सोय ॥ १४ ॥ दास दासी घरमां मृत्यु होय, दिन एक बे त्रणनुं

मोढे बोझीने न करे, मौनपऐ करी दाके.

सूतक सोय ॥ आठ वर्षथी न्हानो मरे शिशु, तो दिन ञाठनुं सूतक इस्युं ॥ १५ ॥ ए जन्म मरणनुं सूतक कह्युं, छन्य यंथमां एमज लह्युं ॥ वली विचारसार मांहे सार, एम जाखे हे श्री छाणगार ॥ १६ ॥ क्रुत्रवंती नारी तणो विचार, त्रण दिन खगे जंगादिक सार ॥ नव द्वे कुखवंती नार, पिकक्रमणां दिन चार निवार ॥ १७ ॥ तपस्या करतां क्षेत्रे सही, दिन पांच पठी जिनपूजा कही।। वली स्त्रीने रोगादिक होय, दिवस त्रण उल्लंघ्या सोय ॥ १७ ॥ रुधिर दींगमां आवे सही, तेनो दोष नव जाणे कहीं ॥ विवेके करी पवित्र थाय नार, पढ़ी जिनदर्शनथी खहे जवपार ॥ १ए॥ एम जिनप्रतिमा पूजा करो, जवसायर खीखाए तरो ॥ वल्ली साधु सुपात्रे दीजे दान, जेम पामो तमे स्वर्ग विमान ॥ २० ॥ जिनपडिमा श्रंगपूजा सार, न करे इतुवंती जे नार ॥ एम चर्चरी यंथ मांहे विचार, ए परमारथ जाणो सार॥ ११ ॥ वली जारूयो सूतक विचार, जाखुं सद्गुरु तणे आधार ॥ तिर्यंच<sup>े</sup> तणो खबसेशज<sup>े</sup> कहुं, ते आगमथी जाणो सह ॥ ११ ॥ घोना जैंस उँट घरमां होय,

प्रसवे दिन एक सूतक जोय ॥ गाय श्रादिनुं मरण जव थाय, कल्लेवर घरथी बाहिर जाय ॥ १३ ॥ एटली वेला सूतक होय, दास दासी कन्या सोय ॥ जन्म होय के मृत्यु जाण, त्रण रातनुं होय प्रमाण ॥ १४ ॥ जेटला मासनो गर्जज पड़े, तेटला दिवसनुं सूतक नडे ॥ जेंस विद्यायां दिन पंदर इध, ते मांहे तो कहीए खद्युद्ध ॥ १५ ॥ गौडधनुं कह्यं प्रमाण, दिवस दश जाणो ग्रण-जाण ॥ ग्रांबी दिन त्याग्र पग्नी ते प्रुध, ते पहेलां तो कहीए अग्रुद्ध ॥ १६ ॥ गौमूत्र मांहे चोवीश प्होर, संमूर्जिम जीव जपजे ते जोर ॥ सोख प्होर जेंसनी नीत मांहे, संमूर्जिम जीव उपजे ते मांहे ॥ १९ ॥ द्वादश प्होर बकरीनी नीत मांहे, आठ प्होर गामर नीत ज्यांय ॥ एहमां संमूर्जिम जपजे सही, एह वात गुरुमुखथी खही॥ २०॥ ए सूतकनो कह्यो विचार, थोमा मांहे जाख्यो सार ॥ सूतक विचार ञ्रागममां कद्यो, जिनेश्वर मुखर्ची सूधो खद्यो ॥ १ए॥ सोहम शुद्ध परंपरा जाण, तेजे करी दीपे जेम नाण ॥ अचलगन्ने वंडु अणगार, श्री पुर्खासंघु सूरीश्वर सार ॥ ३० ॥ जणे सांजले जे नर नार, पाले ते तो गुद्धाचार ॥ अनुक्रमे श्रमर विमाने सोहाय, रयणाजूषण धरी मुक्ते जाय ॥ ३१ ॥ संवत् उंग-णीश डील्लोतरो सार, श्रावण कृष्ण पंचमी हितकार ॥ जलों बंदर चोमासुं करी, चोपाइ सूतकनी कही स्थिर करी ॥ ३१ ॥ श्रावक श्राविका पाले जेह, श्री जिनश्राणाए चाले तेह ॥ सहु कृद्धि सिद्धि तणां सुख सार, वली मुक्ति तणां सुख लहे निर्धार ॥ ३३ ॥ इति सूतकनी सज्काय समाप्त ॥

॥ अय रजस्वला स्त्रीना अधिकारनी गाथा ॥

जा पुष्फपवहं जाणी,-जण नहु संका करेइ नियचित्ते ॥ विवइ च्य प्रंडगाइ, तथ्थय दोसा बहू हुंति ॥ १ ॥

श्चर्यः-जे पुष्पवती स्त्री जाणी करीने पोताना चित्तने विषे शंकाय नहीं श्चने हांमलादिक ठामने श्चाजडे तेने घणा मोटा दोष खागे ॥ १॥

**ब**न्डी नासइ दूरं, रोगायंतह वहंति

च्यणुवरयं ॥ गिहदेव य मुचंति, तं गेहं जे न वर्ज्ञाति॥ २ ॥

अर्थः-तेनी बक्की दूर नासी जाय तथा रोग आतंक विषम अनिवारक थाय, अधिष्ठायिक देव तेनुं घर मूकी जता रहे. ए रीते आजमनेटवाबानुं घर जे नथी मूकतो तेने पूर्वोक्त वानां थाय॥१॥ जइ कहिव आणाजोंगे, पुरिसे वि य निवइ निय महिलाए॥ एहायस्स होइ सुदी, इय जिएयं सबलोएसु॥ ३॥

श्चर्थ:-जो कदाचित् श्वजाणतो थको कोइ पुरुष ते स्त्रीने स्पर्श करे तो स्नान करवाथी शुद्धि थाय ए वात सर्व लोक मांहे कहेली हे ॥ ३॥

विहि जिण्जवणे गमणं, घर पिनमा-पूच्यणं च सज्जायं॥ पुष्फवइ इडीणं, पिडिसिर्इ पुद्यसूरीहिं॥ ४॥

अर्थः-विधिपूर्वक जिनजवनने विषे जावुं, घरमां देवपूजा करवी अने स्वाध्याय करवो, एटलां वानां पुष्पवती स्त्रीने पूर्वसूरिए निषेध्यां वे ॥ ४ ॥

#### ( ३५ )

ञ्राखोञ्जणा न पढइ, पुष्फवइ जं तवं करे नियमा॥निवच्य सुत्तं अन्नंता,गुणइ तिहिं दिवसेहिं॥ ८॥

श्चर्थः-पुष्पवती स्त्री त्रण दिवस सुधी ग्रह पासेथी श्चालोयण लेवाने श्चर्य पोतानुं पाप प्रकाशे नहीं, वली तपस्या न करे, नियम करे नहीं, सूत्र गणे नहीं. वली श्चन्य पण कांइ जाषण न करे ॥ ५ ॥ लोए लोजत्तरिए, एवंविह दंसणं समुद्दिष्टं॥ जा जणइ नि दोसा, सि इंत विराहगो सोज॥६

अर्थः-लोक मांहे तथा लोकोत्तर एटले जिनशासन मांहे उपर प्रमाणे कहे लुं हे. जे कहे हे के एमां दोष नथी तेने सिद्धांतना विराधक जाणवा ॥ ६॥ इति समाप्त ॥

॥ अश्र स्त्रीने शील पालवाना यित्कंचित् बोलो लखीए ठीए॥
१ पिता बांधव प्रमुख कोइ पण पुरुषनी कोटे वलगी मलखं नहीं. २ कोइ परपुरुषने नवराववो नहीं. २ कोइ परपुरुषनं जवटणादिकथी अंगमर्दन करखं नहीं. ४ कोइ परपुरुष साथे पत्रादिकथी खेलखं नहीं. ५ कोइ परपुरुष साथे

करवी नहीं. ६ कोइ परपुरुष साथे हसीने हाश्रताखी लेवी नहीं. 9 कोइ परपुरुषनी वेणी गुंखवी नहीं. 0 कोइ परपुरुषनां श्चंग चांपवां नहीं. ए कोइ परपुरुषना हाश्चनी पाननी बीकी **क्षेत्री नहीं. १० को**इ परपुरुष साथे एक शय्याए बेसवं अने सुबुं नहीं. ११ वाटे शेरीए पुरुषना संगमां जबुं नहीं. १२ घोमा विगेरे आमश विनाना वाहन पर बेसवुं नहीं. १३ ज्येष्ठ, ससरो, सास तथा सासरामां कोइ मोटेरानी साथे ठावाजी करवी नहीं. १४ कोइ परपुरुष साथे एकांतमां रहेवुं नहीं. १५ परपुरुषथी दृष्टि मेलावी सरागथी जोवुं नहीं. १६ कोइ परपुरुष साथे सांकेतिक जापाथी बोलवुं नहीं. १९ योगी, जरका अने जिह्याचरनी साथे जाषण करवुं नहीं. १० कोइ पुरुष देखे तेम वडीनीति खघुनीति करवी नहीं. १ए ज्यां पुरुष सुता होय त्यां अनर्गल यइ फरवं नहीं. २० पुरुष देखतां आलस मरमवी नहीं. २१ तेम शरीरना अवयव जघामा करी बताववा नहीं. २२ अत्यंत मिष्ट पदार्थ खावा पर प्रीति राखवी नहीं. २३ जोजन ऋहप करवुं. २४ मोटे स्वरथी हसवुं नहीं. २५ ऋजाएे घेर जबुं नहीं. २६ पीयर काऊं रहेवुं नहीं. २९ घरनी वात कोइने कहेवी नहीं. २० सासरानुं इव्य कपटची पीयरीयाने त्रापवुं नहीं २ए धीरा तथा नीचा स्वरथी बोखवुं. ३० श्रंग सर्व मंक्ति राखवुं. ३१ पोताना स्वामीनुं अपमान श्राय त्यां जवं नहीं.